स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) तृतीय खण्ड
(अष्टम पत्र- साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना)
डॉ॰ मुन्नासाह
हिन्दी विभाग
जे॰ के॰ कॉलेज

भारतीय साहित्य सिद्धांत – रीति

'रीति' शब्द का अर्थ 'गतिशील हुआ जाए' या 'गमन प्रणाली' होता है। इसके पर्यायवाची शब्द - मार्ग, पंथ, पद्धति, प्रणाली, शैली आदि निश्चित किए गए हैं। भारतीय साहित्य में 'रीति-सिद्धांत' के प्रतिपादक 'आचार्य वामन' को माना जाता है। उन्होंने लिखा है- "रीतिरात्मा काव्यस्य विशिष्टा पदरचना रीतिः।" अर्थात् रीति काव्य की आत्मा है। गुणों से विशिष्ट पदरचना ही रीति है। वामन ने दस शब्द गुणों के साथ दस अर्थ गुण भी माना है। इस तरह वामन ने 20 गुणों को माना है। 'रीति' शब्द से वामन का अभिप्राय केवल शब्दगत सौंदर्य मात्र नहीं है, बल्कि अर्थगत सौंदर्य भी है। वामन ने समस्त रसों का समावेश 'कांति' नामक अर्थगुण में कर दिया है क्योंकि उसमें रस की दीप्ति होती है -"दीप्तरसत्वं कांतिः" वामन ने रीति के तीन भेद किए हैं- (1) वैदर्भी रीति (2) गौड़ी रीति और (3) पांचाली रीति।

वैदर्भी रीति समस्त गुणों से युक्त होती है। 'समग्रगुणा वैदर्भी'। ओज और कांति गुणों से युक्त गौड़ी रीति होती है -"ओजः कान्तिश्च विद्येते यस्यां सा ओजः कान्तिमती, गौडीया नाम रीतिः।" पांचाली रीति माधुर्य और सौकुमार्य गुणों से युक्त होने के कारण यह अगठित, भावशिथिल, छायायुक्त मधुर और सुकुमार होती है।

"आश्लिष्टश्लथभावां तां पुराणच्छाययाश्रिताम्।
मधुरां सुकुमारांच पाञ्चाली कवयो विदुः॥"

वामन के अनुसार इन तीन रीतियों में काव्य उसी प्रकार समाविष्ट हो जाता है, जिस प्रकार रेखाओं के भीतर चित्र प्रतिष्ठित होता है। वामन से पहले आचार्य दण्डी ने 'रीति' की चर्चा करते हुए 'गौड़ी' और 'वैदर्भी' दो रीति माने थे किंतु इनका लक्षण नहीं बताया था। 'वामन' के बाद आचार्य रुद्रट ने 'लाटी' नामक चौथी रीति की प्रतिष्ठा की, रीतियों का भेद निरूपण समास की दृष्टि से किया। इसी क्रम में आचार्य कुन्तक ने रीति की व्याख्या 'मार्ग' के रूप में किया है। उनके अनुसार रचना के तीन मार्ग -(1) सुकुमार (इसके अन्तर्गत वैदर्भी) (2) विचित्र (गौड़ी) (3) मध्यम (इसके अन्तर्गत पांचाली रीति का समावेश हो सकता है।)
'रीति सिद्धांत' की सबसे बड़ी उपलब्धि गुणों की (1) व्याख्या है।